हंसता हुआ धर्म

मुल्ला नसरुद्दीन एक सांझ शराब पी रहा है। अपने घर के सामने वृक्ष के नीचे बैठ कर शराब के प्याले पर प्याले ढाले चला जा रहा है। मेहमान एक घर में आया है। वह मुल्ला को कहता है कि नसरुद्दीन, क्यों इतनी शराब पीते हो? तो नसरुद्दीन कहता है, भुलाने के लिए। तो वह मेहमान पूछता है, क्या भुलाने के लिए? तो नसरुद्दीन कहता है, अपनी बेशर्मी, अपना पाप, अपना अपराध। तो वह मेहमान पूछता है, क्या है अपराध? क्या है पाप? क्या है बेशर्मी? नसरुद्दीन कहता है, यही कि यह शराब की लत पड़ी है।

मुल्ला नसरुद्दीन अपने बेटे को लेकर शराबघर में गया। दोनों शराब पीते हैं और मुल्ला ज्ञान भी देता जाता है। अपने बेटे से कहता है कि हमेशा रुक जाना चाहिए शराब पीने से। सीमा तुझे बता देता हूं। इस सीमा के आगे कभी मत बढ़ना। देख, उस टेबल पर दो आदमी बैठे हुए हैं। जब वे चार दिखाई पड़ने लगें, तब रुक जाना चाहिए। उसके बेटे ने टेबल की तरफ देखा और उसने कहा, वहां एक ही बैठा हुआ है!

मुल्ला नसरुद्दीन एक दिन एक नगर के धनपति के द्वार पर दस्तक दे रहा है। धनपति बाहर आया। मुल्ला ने कहा, एक आदमी बड़ी तकलीफ में है, ऋण से दबा जा रहा है, मरा जा रहा है; कुछ सहायता करो! उस आदमी ने एक रुपया निकालकर नसरुद्दीन को दिया और कहा कि अच्छे खयाल हैं, नेक इरादे हैं, जरूर उसकी सहायता करो। मुल्ला जब सीढ़ियां उतर रहा था, तब उस अमीर ने कहा कि एक मिनट, क्या मैं पूछ सकता हूं वह कौन आदमी है जो ऋण से दबा जा रहा है? मुल्ला ने कहा, मैं ही।

पंद्रह दिन बाद मुल्ला ने फिर उसी आदमी के दरवाजे पर दस्तक दी। उसने मुल्ला को बड़े गौर से देखा और व्यंग्य किया कि मालूम होता है, फिर कोई आदमी ऋण से दबा जा रहा है। मुल्ला ने कहा कि बिलकुल ठीक समझे आप। बहुत गरीब आदमी है, उस आदमी ने कहा। मुल्ला ने कहा, बिलकुल ठीक समझे आप। उसने कहा, और मैं समझता हूं कि वह ऋण से दबे हुए आदमी तुम ही हो। मुल्ला ने कहा, आप बिलकुल गलत समझे। इस बार वह आदमी मैं नहीं हूं। उस आदमी ने कहा कि मैं खुश हुआ यह बात सुनकर। और उसने दो रुपए मुल्ला को भेंट किए। और जब मुल्ला फिर सीढ़ियां उतर रहा था, तब उसने कहा, मियां मैं पूछ सकता हूं कि पिछली बार तो मैं समझ गया कि तुम्हारी उदारता की प्रेरणा कहां से निकली थी; इस बार तुम्हारी इतनी उदारता और इतनी दया और इतनी सेवा का क्या कारण है? मुल्ला ने कहा, इस बार ऋणदाता मैं हूं। ऋणी कोई और है गरीब, और वह बिलकुल चुका नहीं पा रहा है पैसे।

मुल्ला नसरुद्दीन चला जा रहा था रास्ते से। नुमाइश भरी थी। भीड़-भाड़ थी। पहने चूड़ीदार पाजामा और अचकन और गांधीवादी टोपी और बिलकुल पहुंचा हुआ भगत मालूम हो रहा था। एक सुंदर-सी स्त्री दिखाई पड़ गई। अब बूढ़ा हो गया है और कहता है : जगत इत्यादि सब माया है! मगर जब एक सुंदर स्त्री दिखाई पड़ जाये तो ऐसे सिद्धांतों की बातों में कौन पड़ता है! एक धक्का दे लेने का मन हो ही गया। मन ही तो है, धक्का दे दिया। उस स्त्री ने भी चौंककर देखा। उम्र होगी कम-से-कम उसके पिता के बराबर—मुल्ला नसरुद्दीन की। कहा कि शर्म नहीं आती, बाल सफेद हो गये!

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा कि बाई, बाल तो सफेद हो गये, मगर दिल अभी काला है। और धक्का बालों ने थोड़े ही मारा है, धक्का तो दिल ने मारा है।

मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी ने एक दिन उससे कहा कि अब हमें यह मोहल्ला बदलना पड़ेगा, क्योंकि पड़ोस के दो लोग और अच्छे मोहल्लों में चले गये हैं, उन्होंने ज्यादा कीमती मकान किराये पर ले लिये हैं। उनकी स्त्रियां मिल जाती हैं रास्ते पर तो बड़ी दयनीयता मालूम होती है।

तो मुल्ला की पत्नी ने कहा : हमें भी बदलना पड़ेगा। अभी मुल्ला की हैसियत बदलने की थी भी नहीं। मगर एक दिन वह बड़ा उत्साह से भरा हुआ आनंद-मस्त घर आया और उसने कहा : मस्त रहो, खुश हो जाओ! पत्नी ने कहा : क्या कहीं कोई मकान खोज लिया? उसने कहा : मकान नहीं खोजा। इस मकान के मालिक ने किराया दुगना कर दिया। अब हम भी दुगना किराया चुकायेंगे।

– (ओशो पुस्तकों से संकलित)

道